Justice

न्याय का अस्तित्व उतना ही पुराना है जितना मानव-समाज। प्राचीन दार्शनिक न्याय (Justice) को "सदाचार" का पर्यायवाची मानते थे। इसे सामान्य गुण के रूप में देखा जाता था। हर युग में समाज में आमतौर पर न्याय की मांग की जाती रही। प्रक्रियात्मक न्याय (Procedural Justice) ने न्याय के रूप को अधिक सटीक और न्यायालय के कार्य की प्रक्रियाओं का रूप दिया। इस तरह सामान्य न्याय और प्रक्रियात्मक न्याय के रूप में न्याय की अवधारणा का विकास हुआ।

न्याय शब्द लैटिन भाषा के 'Jus' शब्द से बना है जिसका अर्थ है "बांधना" या (Bond or Tie) अर्थात् न्याय उस व्यवस्था का नाम है जिसके द्वारा एक-दूसरे से जुड़ा हुआ रहता है। प्रत्येक व्यक्ति को अपने अधिकारों का उपभोग और कर्तव्यों का पालन एक निश्चित सीमा के अंतर्गत करना चाहिए, यही न्याय का तकाजा है। सामाजिक व्यवस्था में हर मनुष्य का एक न्यायोचित स्थान होता है। इस स्थान को प्राप्त करना ही न्यायपूर्ण (Just) है।

विभिन्न विद्वानों ने न्याय को अपने-अपने ढंग से परिभाषित किया है। परम्परागत विचारधारा के प्रतिनिधि सेफलस (Cephlas) के अनुसार "सदा सत्य बोलना तथा ऋण की अदायगी ही न्याय है"। सोफिस्टों ने जिसकी लाठी उसकी भैंस को ही न्याय समझा था। थ्रेसीमेकस के अनुसार "न्याय शक्तिशाली का हित है"। प्लेटो ने अपनी पुस्तक The Republic में उपर्युक्त परिभाषाओं का खण्डन किया है। Plato के अनुसार अपने "अपने निर्दिष्ट कर्तव्यों को करने तथा दूसरों के कर्तव्यों में हस्तक्षेप नहीं करने" को ही न्याय कहा जा सकता है। Plato ने न्याय की परिभाषा सामाजिक और दार्शनिक दोनों दृष्टिकोणों से दी है। Plato के बाद आज तक विभिन्न विद्वानों ने न्याय की विभिन्न परिभाषाएँ दी हैं। इन परिभाषाओं में भिन्नता के बावजूद एकरूपता पायी जाती है। "राज्य एवं व्यक्ति तथा व्यक्तियों के बीच आपसी आदर्श सम्बन्ध को ही न्याय कहा जाता है।" "Justice means the existence of ideal relations among men and between men and the State"।

न्याय के प्रकार (Kinds of Justice) :— न्याय प्रशासन के दृष्टिकोण से तथा व्यवहारिक पक्ष के आधार पर डी०राफेल तथा मौरिस गिन्सबर्ग ने ... के अतिरिक्त न्याय के विभिन्न प्रकार का उल्लेख किया गया है। न्याय को दो प्रकारों में बाँटा है।

(1) प्राकृतिक या नैतिक न्याय (2) वैधानिक न्याय (Legal Justice)

(1) प्राकृतिक न्याय (Natural Justice) :— इस प्रकार के न्याय में नैतिक मापदण्ड व्यक्ति के अधिकार तथा सुरक्षा के लिए अनिवार्य हैं। इस प्रकार के न्याय के अंतर्गत व्यक्ति को नैतिक मापदण्डों को ध्यान में रखकर अपराधियों को दण्ड दिया जाता है। तथा उन्हीं मापदण्डों के आधार पर न्याय किये जाते हैं। इस दृष्टिकोण से न्याय कानून से स्वतंत्र रहता है। इसे राज्य की स्वीकृति एवं सहायता की अपेक्षा नहीं होती है।

(2) वैधानिक न्याय (Legal Justice) :— वैधानिक न्याय की मान्यता राज्य द्वारा निर्मित कानून द्वारा दी जाती है। इस न्याय का प्रशासन अदालतों द्वारा होता है। इसका आधार सत्य एवं ... है। इस प्रकार के न्याय का क्षेत्र राज्य की सीमा के अंतर्गत होता है। प्राकृतिक न्याय का आधुनिक युग में महत्व ... वैधानिक न्याय ही उस रूप को ... नैतिकता और वैधानिक ... इस दृष्टिकोण से सालमण्ड ने न्याय को सार्वजनिक और निजी न्याय में विभक्त किया है।

Scanned with CamScanner

① सार्वजनिक न्याय (Public Justice) :— सार्वजनिक न्याय वह है, जो न्यायालयों द्वारा प्रकाशित होता है। जब कभी भी व्यक्ति अपनी शिकायतों को न्यायालय के सम्मुख रखते हैं और वहाँ से न्याय प्राप्त होता है उसे सार्वजनिक न्याय कहते हैं। सार्वजनिक न्याय का प्रश्न तब उठता है जब किसी व्यक्ति को निजी न्याय के अन्तर्गत न्याय प्राप्त नहीं हुआ हो। सार्वजनिक न्याय न केवल वादी तथा प्रतिवादी के अधिकारों को निर्धारित करता है, बल्कि इन्हें क्रियान्वित करता है संक्षेप में सार्वजनिक न्याय वह न्याय है जिसके द्वारा निजी न्याय क्रियान्वित किया जाता है।

② निजी न्याय (Private Justice) — निजी न्याय वह न्याय है जो एक व्यक्ति का दूसरे व्यक्ति के साथ सम्बन्ध निर्धारित करता है। यह न्यायालय के क्षेत्र से बाहर क्रियान्वित किया जाता है। उदाहरण के लिए यदि अगर "क" ने "ख" से रुपया लिया हो तो "ख" का "क" से रुपया प्राप्त करना निजी न्याय का अंग है। अगर "क" "ख" के रुपये लौटाने से इन्कार करता है तो सार्वजनिक न्याय का प्रश्न उठता है और "ख" अपने रुपये प्राप्त करने के लिए "क" के विरुद्ध न्यायालय में जा सकता है।

कुछ आधुनिक विचारकों ने सामाजिक न्याय आर्थिक न्याय तथा रा० न्याय की भी चर्चा की है।

① सामाजिक न्याय :— सामाजिक न्याय का अर्थ समाज है इसका अर्थ है कि समाज में रहने वाले लोग ~~सभी~~ आर्थिक है आर्थिक पैमाने पर समान हों। धन और विशेष अधिकार से उत्पन्न असमानता को दूर किया जाय। तथा धर्म, जाति, लिंग के आधार पर किसी भी व्यक्ति के साथ भेद-भाव नहीं किया जाय। भारतवर्ष में सदियों से अस्पृश्यता का रोग चला आ रहा है। अमेरिका तथा अफ्रीका में आज भी गोरों और कालों का भेद व्यापक रूप से चला आ रहा है। इस प्रकार का ~~भेद~~ भेद सामाजिक न्याय के मूलभूत सि० के प्रतिकूल है।

प्लेटो ने न्याय की व्याख्या करने के प्रसंग में सामाजिक न्याय तथा व्यक्तिगत न्याय का वर्गीकरण किया था। प्लेटो के अनुसार, सामाजिक न्याय समाज में रहने वाले विभिन्न प्रकार के व्यक्तियों के द्वारा आपस में समाहित होकर कुशलता पूर्वक अपने-अपने निर्धारित कर्तव्यों को करने में निहित है। Plato ने सामाजिक न्याय के लिए के आधार पर सम्पूर्ण जनता को तीन वर्गों - उत्पादक, संरक्षक और शासक में बाँट दिया था। उसके अनुसार व्यक्ति अपने स्वभाव और क्षमता के अनुसार किसी एक वर्ग की हैसियत से कार्य करता है तो वह न्याय है और वह सामाजिक न्याय के सि० का पालन करता है।

② आर्थिक न्याय :— आर्थिक न्याय सामाजिक न्याय का ही अंग है आर्थिक न्याय का अर्थ है राज्य एवं समाज में रहने वाले लोगों के आर्थिक दृष्टिकोण से समानता। समाज के प्रत्येक व्यक्तियों को न केवल जीविकोपार्जन के लिए समान अवसर दिये जायें बल्कि सभी को बिना किसी भेदभाव के समान कार्य के लिए समान पारिश्रमिक देने की व्यवस्था की जाय। लोककल्याणकारी राज्य का यह उद्देश्य है कि वह कि वह नागरिकों के बीच आर्थिक समानता स्थापित करे। भारत भी अपने संविधान में राज्य के नीति निर्देशक तत्वों के माध्यम से आर्थिक एवं सामाजिक न्याय की स्थापना करने के लिए सतत प्रयत्न है।

③ राजनीतिक न्याय — रा० न्याय का अर्थ है, समाज में रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति को राजनीतिक अधिकार प्राप्त हो। रा० दृष्टि से नागरिकों के बीच समानता हो कुछ लोगों का अधिकार। राज्य का प्रमुख उद्देश्य रा० न्याय है। राज्य में व्यक्तियों को स्वतंत्रता तथा सुविधायें प्राप्त होनी चाहिए। प्रत्येक नागरिक को

Scanned with CamScanner

अपने अधिकारों एवं स्वतंत्रताओं को समुचित रूप से उपभोग करने का अवसर दिया जाना चाहिए। राजनीतिक न्याय का अर्थ है कि राज्य के अन्दर रहनेवाले सभी नागरिकों को बिना भेदभाव के मतदान का अधिकार, भाषण तथा लेखन की स्वतंत्रता, प्रार्थना एवं अधिकारों के उपभोग में, किसी प्रकार की बाधा नहीं उत्पन्न की जाए।

राज्य एवं न्याय की आधारशिला है। यह राज्य तथा अन्य एवं समूहों में अन्तर बतलाता है। अन्य एवं संस्थाओं को एवं न्याय के प्रशासन का अधिकार प्राप्त नहीं होता, यह अधिकार केवल राज्य को ही प्राप्त होता है। यदि नागरिकों के एवं न्याय का निषेध किया जाता है तो उन्हें न्यायालय में जाना पड़ता है। विद्वानों का मत है कि न्याय का औचित्य सामाजिक मान्यताओं पर निर्भर करता है। उदाहरण के लिए, लोकतंत्रात्मक राज्य में न्याय का अर्थ है वैयक्तिक स्वतंत्रता और समानता का अवसर, किन्तु सर्वाधिकारी राज्य में न्याय का अर्थ राज्य की इच्छाओं को पूर्ण मान्यता देना।

स्वतंत्रता और न्याय के बीच संबंध :— न्याय स्वतंत्रता का रक्षक है। इस व्यक्ति को पूर्ण स्वतंत्रता मिलने पर ही वह अपने व्यक्तित्व का समुचित विकास कर सकता है। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि व्यक्तिगत स्वतंत्रता सामाजिक हित से भिन्न है या उसके विरोध में है। व्यक्ति और समाज एक दूसरे के पूरक हैं, लेकिन अपवाद स्वरूप ऐसी परिस्थितियाँ पैदा हो सकती हैं कि सामाजिक कल्याण के लिए व्यक्ति की स्वतंत्रता को सीमित करना पड़े, तभी सामाजिक न्याय की प्राप्ति हो सकती है। उदाहरण स्वरूप युद्धकाल या आन्तरिक अशान्ति में व्यक्तियों की स्वतंत्रता पर प्रतिबंध लगाया जाता है तथा नागरिक अधिकारों के प्रयोग पर रोक लगायी जा सकती है। सरकार ऐसा राष्ट्र की सुरक्षा और स्वतंत्रता को बनाये रखने के लिए कर सकती है। सरकार का यह कदम न्यायपूर्ण होगा। इसी प्रकार कुछ विशेष वर्गों को सुविधाएँ प्रदान करना या कुछ विशेष वर्गों की सुविधाओं को समाप्त करना भी न्यायपूर्ण समाज की स्थापना के लिए आवश्यक हो जाता है, जैसे — अमीरों पर टैक्स लगाकर गरीबों को सुविधाएँ प्रदान करना तथा ~~कुछ विशेष वर्गों की सुविधाओं को समाप्त करना~~ जमींदारों से जमीन लेकर भूमिहीनों में बाँटने के लिए सरकार कदम उठाती है। यह कहना गलत होगा कि ऐसे कदम स्वतंत्रता का मूल्य चुकाकर न्याय के नाम पर किया जाता है। वस्तुतः अन्याय की स्थितियों को समाप्त करने के लिए स्वतंत्रता को सीमित किया जाता है।

व्यक्ति ने न्याय को अंतिम मूल्य कहा है। इसका मुख्य कारण यह है कि न्याय विभिन्न विरोधी मूल्यों के बीच समन्वय स्थापित करता है। स्वतंत्रता और समानता के बीच भी अन्तिम तथा विवेकपूर्ण सामंजस्य ही न्याय का आधार है। अतः निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि स्वतंत्रता और न्याय का आपस में घनिष्ठ संबंध है। वे सभी मानव-समाज के अंतिम मूल्य की स्थापना में सहायक होते हैं।

Scanned with CamScanner